अतीत-स्मृतियों
की
सर्वोत्तम प्रश्नोत्तरी

१. हड़प्पा तथा मोहनजो दड़ो

प्रश्न—हड़प्पा तथा मोहनजो दड़ो का ऐतिहासिक परिचय दीजिये।

उत्तर—**हड़प्पा**—पंजाब तथा सिंध प्रान्त की खुदाई से बड़ी पुरानी सभ्यता का पता चला है। सन् १६२० व २१ में हड़प्पा की खुदाई पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर सर जॉन मार्शल की आज्ञा से श्रीयुत दयाराम साहनी ने की थी। हड़प्पा मिंटगुमरी जिले का एक गॉव है। यह रावी नदी के दक्षिण की ओर बसा हुआ है। मिंटगुमरी स्टेशन से १६ मील पश्चिम की ओर हड़प्पा रोड़ नामक एक रेलवे स्टेशन है। इस स्टेशन से हड़प्पा गॉव कोई चार-पॉच मील पर स्थित है। हड़प्पा के थेह (टीले) पृथ्वी से ३० फुट से लेकर ६० फुट तक ऊचे हैं। यहॉ से जो मोहरें तथा अन्य वस्तुएं प्राप्त हुई हैं, उनसे पता चलता है कि वे वस्तुए प्राक् ऐतिहासिक काल की (अति प्राचीन) हैं।

मोहनजो दाड़ो—सन् १६२१-२२ में हड़प्पा के एक वर्ष बाद मोहनजो दाड़ो की खुदाई स्व० डाक्टर राखलदास बनर्जी ने आरम्भ की थी। यह स्थान सिंध में नार्थ वैस्टर्न रेलवे के ढाकरी स्टेशन, जिला लड़काना से ८ मील की दूरी पर है। यहॉ के

थेह पृथ्वी से २० फुट से लेकर ७० फुट तक ऊँचे हैं। सन् १९३१ तक इनकी खुदाई जारी रही।

इन दोनों स्थानों की खुदाई से पता चलता है कि एक नगर के नष्ट होने के बाद दूसरा नगर बसा लिया जाता था। इस प्रकार सात नगरों के चिह्न मिलते हैं। मोहनजो दड़ो से निकले हुए मकान, हड़प्पा के मकानों की अपेक्षा बड़े खुले तथा सुन्दर ढग से बने हैं।

प्रश्न—हड़प्पा और मोहनजो दड़ो की खुदाई करने से क्या क्या सामग्री मिली और उन वस्तुओं से हमारी सभ्यता पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—हड़प्पा और मोहनजो दड़ो दोनों स्थानों के खडहरों की खुदाई करने से पता चलता है कि भारत प्राचीन समय में कितना सभ्य था। यहाँ के नगर बडे विशाल तथा भवन बहुत पक्के ढग से बने हुए थे। मकान, गलियाँ, नालियाँ, सड़कें तथा बाजार बडी योग्यता से बने हुए थे। यहाँ से जो हथियार पाये गये हैं, वे आर्यों की सभ्यता के प्रमाण ही नहीं, अपितु वे वैदिक तथा आर्य सभ्यता के भी आदि श्रोत हैं। हड़प्पा मे कितनी ही मिट्टी की मोहरें मिली हैं, जिन पर तरह तरह के चित्र बने हुए हैं। मोहनजो दडो मे जो गेहू के दाने मिले है, वे आज-कल के पजाब के गेहुँओं के समान ही हैं। बहुत से मकानों से चरखों की पखडियाँ मिली हैं, जिन से मालूम होता है कि पहिले घर घर में चरखे चलाये जाते थे।

उन दिनों जेवर पहिनने की चाल बहुत थी। स्त्री-पुरुष दोनों हमली पहिनते थे। स्त्रियाँ कान में बाली, हाथ में चूड़ी, कमर में कर्धनी तथा पैर मे कडे या साँठ पहिनती थीं। आभूषण सोने तथा चादी दोनो के होते थे। हाथी दाँत का भी काम होता था। मोहरों से मालूम होता है कि चीते आदि का शिकार होता था।

वहाँ से जो हथियार निकले हैं, वे सब पत्थर व तांबे के हैं। लोहे की कोई चीज़ न मिलने के कारण मालूम होता है कि उस समय लोहे से लोग अपरिचित थे। यहाँ से तोलने के तराजू व बाट भी पाये गये हैं; जिस से मालूम होता है कि उस समय व्यापार खूब उन्नत था।

रहने के मकान व सरकारी भवन बड़े लम्बे चौड़े थे। एक भवन मिला है, जो १६८ फुट लम्बा और १३६ फुट चौड़ा है। दोनों ओर समकोण हैं। बीच में बड़ा आँगन व कमरा है। स्नानागार बड़े सुन्दर ढंग से बने हैं। फर्श ईंटों के बने हुए मजबूत हैं। परन्तु धर्म के विषय में कोई विशेष वस्तु नहीं मिली। अनेक मूर्तियों से निश्चय होता है कि माता के रूप में प्रकृति की उपासना की जाती थी। एक मुद्रा पर त्रिमुख, साधना में लीन एक देवता का चित्र है। इस से मालूम होता है कि मूर्तिपूजा की प्रथा भारत में अनादि काल से थी।

जो सामग्रियाँ प्राप्त हुई हैं उस से पता चलता है कि हमारी प्राचीन सभ्यता ५००० वर्ष पूर्व भी विश्व में बहुत ऊँची थी। ईराक में जो मोहरें मिली हैं वे हड़प्पा व मोहनजो दड़ो की मोहरों के समान ही हैं। सम्भव है कि सिन्ध के कांठे से ये मोहरें व्यापारियों द्वारा ईराक पहुँची हों। कुछ भी हो इतना अवश्य है कि आर्य-सभ्यता आज से ३००० से ५००० वर्ष पूर्व ही आदर्श तथा उन्नति के शिखर पर पहुँची हुई थी।

(२)

२—तक्षशिला (५)

प्रश्न—तक्षशिला का सामान्य परिचय देते हुए. वहा जो नगर पाये गये है, उनका संक्षिप्त परिचय दीजिये।

उत्तर—पश्चिमी पंजाब के प्रसिद्ध नगर रावलपिण्डी से २०

मील पश्चिम की ओर सरायकाला नाम का स्टेशन है। आजकल इसे टैक्सिला स्टेशन कहते है। इसी स्टेशन से थोड़ी दूरी पर एक टीला है। इसके आस-पास की भूमि पर प्रकृति-देवी की कृपा है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दृष्टि-गोचर होती है। पग पग पर स्वच्छ पानी के झरने मन को मोहित करते हैं। यहीं आर्यो की सस्कृति व सभ्यता का जन्म तथा विकास हुआ था। यहीं पर कौरव-पाडवों के साम्राज्य का उत्थान व पतन हुआ।

तक्षशिला नाम पड़ने के कारण—१. कुछ विद्वानों का कथन है कि श्री रामचन्द्रजी के भाई भरत के दो पुत्र थे—तक्ष और पुष्कल। भरत ने अपने मामा की प्रेरणा से गाँधार को जीता। गाधार का राज्य भरत ने अपने दोनों पुत्रों को दे दिया। तक्ष ने जहाँ अपनी राजधानी बनाई, वही तक्षशिला है।

महाभारत के अनुसार—२. महाभारत के युद्ध के बाद आर्य जाति निर्वल हो गई। नाग वश की एक जगली जाति ने महाभारत के अन्तिम राजा परीक्षित को मार डाला। नाग अर्थात् तक्ष जाति के नाम से इस स्थान का नाम तक्षशिला पड़ा हो। यह भी सम्भव है कि भरत-पुत्र तक्ष के वशज ही नाग (तक्ष) रहे हो।

सन् १६१२ के लगभग पुरातत्व विभाग के डाइरेक्टर सर जान मार्शल की दृष्टि इस टीले की ओर गई, उन्होंने इसे खुदवानाआरम्भ किया। इसके नीचे उन्हें जो कुछ मिला इससे उनकी आशा और भी बढी। इस टीले के नीचे बड़े बड़े नगरों के चिन्ह मिले। इस खुदे हुए स्थान का ६ मील का घेरा है। खोज करने से मालूम हुआ कि इसी टीले का नाम पहिले तक्षशिला था। जो खण्डहर अब तक मिले है, उससे मालूम होता है कि यहाँ एक ही शहर नहीं अपितु तीन नगर थे।

१—भीरुमन्द, २—सिरकप, ३—सिरसुख

भीरुमन्द—मालूम होता है भीरुमन्द इन सबसे प्राचीन नगर था। यह मौर्य राज्य में उत्तर भारत की राजधानी भी रहा। यह लम्बा चौड़ा और रमणीय नगर था। यहाँ पर कई इमारतें ज्यों की त्यों खड़ी हैं; मानो अभी बनी हों। प्राचीन सभ्यता की कारीगरी का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सिरकप—भीरुमन्द से लगभग आध मील की दूरी पर सिरकप नगर मिला है। ईसा के पूर्व दूसरी सदी में जब यूनानी आक्रमणों ने भीरुमन्द को नष्ट कर दिया तब सिरकप की स्थापना की गई मालूम होता है। शहर की दीवारों व किलों की ऊंचाई २० से ३० फुट तक थी। यहाँ पर एक बड़े भारी महल के खंडहर भी मिले हैं। सम्भवतः इनकी दो मंजिलें थीं। सिरकप में शिलालेख पाये गये हैं, जो खोरष्टी लिपि में लिखे हुए हैं। कुछ दिनों तक सिरकप कुशान वंश की राजधानी भी रहा। कहते हैं, इस नगर को बसाने वाले राजा का नाम ही सिरकप था। जिसको शतरंज खेलने का बड़ा शौक था। सम्भव है कि राजा के नाम से ही सिरकप पड़ा हो।

सिरसुख—यह नगर टीले पर नहीं अपितु मैदान पर बसा हुआ है। इसकी खुदाई में कनिष्क की मुद्राएं मिली हैं। इससे पता चलता है कि इसकी स्थापना कनिष्क ने की होगी। इस नगर के चारों ओर २० फुट ऊंची दीवार है। दीवारों के भीतर खडहरों पर आज कल तीन गाँव बसे हुए हैं।

प्रश्न—तक्षशिला में प्राप्त स्तूपों का संक्षिप्त परिचय दो।

उत्तर—तक्षशिला में कई स्तूप पाये गये हैं, जिनमें से—

धर्मराज स्तूप, कुणाल स्तूप, वाल्हार स्तूप प्रसिद्ध हैं।

धर्मराज स्तूप—यह हारी नदी की घाटी से लगभग २०० फुट ऊँचा है। यह सभी स्तूपों से बड़ा है। इस स्तूप के बनाने से पूर्व यहाँ पर कोई बस्ती अवश्य थी। इस स्तूप का बड़ा महत्व है। यह स्तूप भगवान बुद्ध के शेषांगों (फूल) के आधार पर बनाया गया था। इसमें पार्थियन राजा आसेज का शिला-लेख मिला है। जो खोरष्टी लीपि और सस्कृत भाषा में लिखा हुआ है। कुशान शाशनकाल में किसी विदेशी यात्री ने इसे लिखाया था। यह यात्री बलख का रहने वाला था। इससे स्पष्ट होता है कि बौद्ध धर्म का विदेशों में कितना मान था।

कुणाल स्तूप—यह सिरसुख नगर के बाहर पहाड़ी पर है। इसकी ऊँचाई लगभग सौ फुट है। कहा जाता है यह स्तूप महाराजा अशोक के पुत्र कुणाल की स्मृति में बनाया गया था। कथा प्रसिद्ध है कि अशोक की दूसरी रानी तष्यरक्षिता कुणाल से प्रेम करती थी, परन्तु कुणाल मातृ-पितृ भक्त था। जब कुणाल ने तष्यरक्षिता की बात को ठुकरा दिया तो रानी ने बदला लेने की सोची। एक बार राजा अशोक बीमार हुए। रानी ने बड़ी सेवा की। उसी के फलस्वरूप रानी को सात दिन का राज्य मिल गया। रानी ने एक दूत द्वारा महाराज अशोक की मुद्रा युक्त एक पत्र तक्षशिला के दण्डपति को लिखा कि कुणाल की आँखों को फोड़ दिया जाय। कुणाल ने दण्ड स्वीकार करते हुए अपने नेत्रों को निकलवा दिया। जहाँ उनके नेत्र निकाले गये थे, वहीं उनकी स्मृति में कुणाल स्तूप बनवाया गया।

भाल्हार स्तूप—यह स्तूप तक्षशिला से उत्तर में हारी नदी

उत्तर :- तक्षशिला का सब से बड़ा महत्व वहां के विश्व-विद्यालय से है, जो उस समय सारे भारत का शिक्षा केन्द्र था। भारत के ही नहीं विश्व के विद्यार्थी वहां आकर विद्या पढ़ते थे। अमीर या राजपुत्रों से शिक्षा शुल्क [फीस] लिया जाता था। परन्तु गरीब विद्यार्थियों से नहीं। गरीब विद्यार्थी दिन में अचार्यों के घर में काम करते थे और रात को शिक्षा पाते थे। पणिनि तथा चाणक्य जैसे विद्वान यहां के आचार्य थे। विम्बसार राजा के राज्य वैद्य जीवक यहीं की विभूति थे। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कई महाविद्यालय थे। जैसे:—वैदिक शिल्पविज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद सैनिक तथा अष्टादशविद्या-महाविद्यालय।

वैदिक महाविद्यालय—इस में वेदों तथा व्याकरण की शिक्षा दी जाती थी।

अष्टादश महाविद्यालय—इस मे वेदों व वेदाङ्गों के अतिरिक्त न्याय, मीमांसा आदि अनेकों शास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी।

शिल्प-विज्ञान विद्यालय—इसमें विभिन्न विज्ञान व शिल्प-विद्या सिखाने का प्रबन्ध था।

सैनिक महाविद्यालय—इसमें शस्त्रों व सेना-सचालन की शिक्षा मुख्य थी।

ज्योतिष महाविद्यालय—यहाँ खगोल, भूगोल, ज्योतिष, गणित आदि शास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी।

आयुर्वेद महाविद्यालय :—उस में रोग चिकित्सा औषधि निर्माण: तथा शल्य [चीर-फाड़] की शिक्षा दी जाती थी।

६—राजगृह

प्र०—राजगृह का ऐतिहसिक तथा भौगोलिक परिचय दीजिये।

उत्तर—राजगृह, विहार प्रान्त के पटना जिले में एक गांव है। पटना से २५ मील पूर्व की ओर वख्तियारपुर रेलवे का छोटा सा जकशन है। वहां से १ मील राजगृह है। राजगृह अत्यन्त प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है। जलवायु की दृष्टि से राजगृह का बड़ा महत्व है। यहाँ गर्म जल के झरने बहुत पाये जाते हैं। इस जल में दो चार बार स्नान करने से चर्म रोग दूर हो जाते हैं।

आज से तीन हजार वर्ष पूर्व इस नगर का निर्माण जरासंध ने किया था। महाभारत में इस का नाम गिरिव्रज है। क्योंकि यह स्थान वज्र के समान कठोर पहाड़ों से घिरा हुआ है। शिशु-नाग वश के राजाओं के काल में इसका नाम राजगृह पड़ा। यह स्थान आजकल राजगीर कहलाता है।

प्रश्नः—राजगृह का धार्मिक तथा ऐतिहासिक महत्व क्या है? संक्षेप से लिखिये?

उत्तर :—राजगृह इसके बाद बहुत देर तक मगध साम्राज्य की राजधानी रहा! ५०० वर्ष पहले शिशुनाग वंश के राजा उदपी ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र में वनाई। पर इससे राजगृह का महत्व कम न हुआ।

धार्मिक दृष्टि में राजगृह का बड़ा महत्व है। क्योंकि बिम्ब-सार के राजत्वकाल में गौतमबुद्ध ने अपने धर्म का प्रचार किया। स्वयं बिम्बसार भी सपरिवार बौद्ध धर्म मे दीक्षित हुये। उनकी देखा देखी बौद्धों ने अपने धर्म के सिद्धान्तों के प्रचार के लिये राजगृह से वाहर उतर दिशा में ७—८ मील की दूरी पर एक बहुत बड़ा नालन्दा नाम का विश्वविद्यालय

बनाया जिसमें भारत तथा अन्य देशों से विद्यार्थी आ कर विद्या प्राप्त करते थे।

यह जैनियों का भी सबसे पवित्र तीर्थ है। जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर वर्धमान ने अपने मत के प्रचार का केन्द्र इसी को बनाया था। पहाड़ियों पर जैनियों के बहुत सुन्दर मन्दिर हैं। इनकी संख्या प्रतिवर्ष बढती ही जाती है। प्रत्येक मन्दिर में तीर्थंकर महावीर की मूर्ति प्रतिष्ठित है। राजगृह में आप अन्यान्य धर्मों के चिह्न भी पायेंगे। हिन्दुओं और मुसलमानों के मन्दिर-मस्जिद एक दूसरे से सटे हैं। सिक्खों ने भी वहां पर अपना एक बहुत बड़ा ही सुन्दर गुरुद्वारा बना लिया है। ईसाई पादरी भी पीछे न रह सके। उन्हों ने भी अपने गिरजा घर आदि स्थान बना लिया है। इसलिए राजगृह आज अतीत की एक स्मृति मात्र रह गया है। जरासंघ और बिम्बिसार के राज्यप्रसाद पृथ्वी के गर्भ में विलीन हो गये हैं। इस समय यहा पर निम्न चीजें देखने के योग्य हैं।

१ अशोक की लाट जो ६० फुट ऊँची है।

२ एक दूसरी लाट जो पांच पर्वतों की घाटी के बीच में है, पर अब गिरी हुई दशा में है।

३. पर्वत की चोटी वाला जैनमन्दिर जिसे मनिधर मठ कहते हैं। यह मन्दिर १७८० सन् में बनाया था।

४ सोन भण्डार गुफा, जोकि वैभवगिरि में है। यहां पहिले राज कोष था।

इनके अतिरिक्त यहा के गरम पानी के सोते, जैसे ऊपर कहा गया है, देखने लायक हैं। यहा सरस्वती नाम की एक नदी बहती है, यह गरम पानी के सोते इसी नदी के दोनों किनारों पर है। सप्तऋषिकुण्ड मे सात धारायें है। जिनमें एक धारा

बहुत गरम और तेज है। आजकल ज्यादा आवादी ब्राह्मणों की है। इस समय यह स्थान एक मुसलमान जिमींदार के अधिकार में है।

(५) (४)

वैशाली

प्र०—वैशाली का महत्व तथा उसकी खुदाई मे मिलने वाले भग्नावषेशों को परिचय दीजिये।

उत्तर—लिच्छवी लोग प्राचीन भारत की एक प्रसिद्ध क्षत्रिय जाति के थे। उनका निवास आधुनिक बिहार प्रांत के उतर में था। उनके जनपद की राजधानी वैशाली थी। यह स्थान वर्तमान मुजफ्फर पुर जिला में अवस्थित हैं और उसे आजकल बसाढ़ कहते हैं। प्राचीन समय में वैशाली था। प्राचीन समय में वैशाली के चारों तरफ तिहरा परकोटा बना हुआ था। जिसमें स्थाना २ बड़े २ दरवाजे और गोपुर बने हुए थे।

इस नगर का बहुत बड़ा ऐतिहासिक महत्व है। यह अपनी पौराणिक, आध्यात्मिक और धार्मिक विशेषताओं के लिये प्रसिद्ध है। रामचन्द्र जी की जनकपुर यात्रा का वर्णन करते हुये, बाल्मीकि ने लिखा कि आप एक रात विशाला नामक गांव में ठहरे थे। लिच्छवियों की शासन-पद्धति के विषय में हमें बौद्ध-साहित्य से कुछ हाल मालूम हुआ है। किन्तु राज्य के सामूहिक कार्य का विचार एक परिषद में होता था। जिसके वे सब सदस्य होते थे। शासन प्रबन्ध के लिये इसमें से शायद ८ या ९ आदमी गणराजा चुन लिये जाते थे वैशाली में उनके अभिषेक-मंगल के लिये एक पोखरनी थी। वैशाली के सब राजा और रानियों का उसी पोखरनी के जल से अभिषे होता था।

बौद्ध-साहित्य से ज्ञात होता है कि सर्व प्रथम जिस समय

भगवान बुद्ध वैशाली आये, उस समय वहां एक भयंकर बीमारी फैली थी। किन्तु उनके आते ही बीमारी दूर हो गई। वैशाली की दूसरी यात्रा के अवसर पर बुद्ध ने एक गणिका का आतिथ्य ग्रहण किया था।

प्रश्नः—प्राचीन समय में वैशाली के कितने भाग थे? उनकी खुदाई की सामग्री व स्तूपों का वर्णन करो।

उत्तर—प्राचीन समय में वैशाली तीन भागों में विभक्त था। पहला वैशाली जिसे अब बसाढ़ कहते हैं। दूसरा विशाल ग्राम और तीसरा कुशड़ ग्राम, जिन्हें अब क्रमशः बनियां और कोल्लगांव अर्थात् कोल्हुआ कहते हैं। चीनी यात्री ह्यूएसनसांग ने कोल्हुआ के सम्बन्ध में लिखा है, वैशाली के उत्तर-पश्चिम में अशोक का बनवाया एक ५०-६० फुट ऊँचा स्तम्भ है। जिस पर सिंह की मूर्ती बनी है। तालाब के पश्चिम दबकर एक दूसरा स्तूप है, जहाँ बन्दरों ने बुद्ध भगवान को शहद दिया था। तालाब के एक किनारे पर बन्दर की एक मूर्ति बनी थी वहां अशोक की लाट की ऊँचाई ५०-६० फुट की जगह सिर्फ २२ फुट रह गई है। सम्भव है लाट का कुछ हिस्सा जमीन के अन्दर धस गया है। सन १६०४ में किले की खुदाई जब हुई, तो पुरानी इमारतों के बहुत से चिह्न मिले हैं। जिनमें से कुछ मकान तो प्रायः १६-१७ सौ साल पहले बने थे। एक कमरे में जले चावल, पुराने बर्तन, सात सौ से अधिक मोहरें पायी गयीं थीं। उन मोहरों का समय अनुमानतः चौथी या पाँचवीं सदी रहा होगा।

खुदाई के समय हड्डियां, राख और जली लकड़ियां भी पायी गयी थीं। जिन से विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुचे कि कभी यह नगर लुटेरों द्वारा लूटा गया होगा।

यहा किले से कुछ दूर दक्षिण-पश्चिम कोने पर एक

एक स्तूप है। जिस पर कई मुसलमानी कब्रे पीछे से बनवाई गई हैं। बसाढ़ में एक तालाब का नाम वामन तालाव है। ऐसा कहा जाता है कि वामन भगवान ने यहीं राजा बलि के अभिमान को चूर किया था। (८)

कुशीनगर

प्रश्न—कुशीनगर का ऐतिहासिक परिचय दो, कि प्राचीन काल में उसका क्या महत्व था।

उत्तरः—प्राचीन समय में मल्ल वंश के लोगों का बिहार प्रान्त के उत्तर में एक विशाल राज्य था मल्लों का अपना राष्ट्र दो भागों में विभक्त था। इनके पावा और कुशीनगर दो प्रसिद्ध नगर थे। कुशीनगर यहाँ की राजधानी थी। इस नगर को बौद्ध ग्रन्थों में "कुशीनारा" कहा गया है। कुशावती भी इसे कहते हैं। यह स्थान गोरखपुर जिले में स्थित है।

कुशीनगर बौद्धों के चार प्रसिद्ध स्थानों मे से एक था। (१) लुम्बिनी—जहां बुद्ध का जन्म हुआ था। (२) बोधगया—जहां बुद्ध भगवान को बोद्धी प्राप्त हुई थी। (३) सारनाथ—जहां बुद्ध भगवान ने सर्व प्रथम उपदेश दिये थे। ४ कुशीनगर—यहां तथागत बुद्ध की मृत्यु (निर्वाण) हुई। इसी कारण बौद्ध कुशीनगर को अधिक महत्व देते हैं। यहा प्रतिवर्ष हजारों बौद्ध, चीन, जापान, लंका, तिब्बत, श्याम आदि देशों से दर्शनार्थ आते हैं।

प्रश्नः—कुशीनगर की खुदाई करने से भारत की प्राचीन संस्कृति के जो अवशेष मिले हैं, उनका उल्लेख करो।

उत्तरः—कुशीनगर की वर्तमान-काल मे दो-तीन बार खुदाई की गई। इस खुदाई से बौद्ध मूर्तियां, मठ, कुँए, प्राचीन सिक्के आदि ऐतिहासिक वस्तुयें प्राप्त हुई है। यहां का प्रधान खंडहर नहीं है, जहां भगवान बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। यहाँ बुद्ध की

दो विशाल मूर्तियां मिली हैं। एक मूर्ति ठीक उसी स्थान पर है, जहा तथागत ने शरीर त्याग किया था। यह मूर्ति २० फुट लम्बी, उत्तर की ओर सिरहाना किये लेटी है। मूर्ति की विशेषता यह है कि वह सारी एक पत्थर की बनी हुई है।

मन्दिर के पास ही पूर्व की ओर दो स्तूप हैं। दोनों खुदाई के समय टूटी अवस्था में मिले थे। इनके अतिरिक्त एक अत्यन्त प्राचीन स्तूप मिला है, जिस को आजकल स्वर्ण स्तूप कहते हैं। चौथा स्तूप मुकुट बन्धन मे है। इस स्थान में भगवान बुद्ध का दाह सस्कार हुआ था।

खुदाई के समय यहा कितने ही मठों के टूटे फूटे चिह्न मिले है। इन मठों के कुछ दूर दक्षिण-पश्चिम में एक विशाल बुद्ध-प्रतिमा मिली है। आस पास के लोग इसे माथ-कुँवर कहते है। और गॉव के लोग इस को इसी नाम का देवता मान कर पूजते हैं।

प्रश्न'—मृत्यु के समय भगवान बुद्ध ने अपने शिष्य आनन्द को यहा क्या उपदेश दिये थे ?

उत्तर '—कुशीनगर जाते समय एक दिन महात्मा बुद्ध ने पावानगर में एक सुनार के घर मे भोजन किया। भोजन कर के बाद ही भगवान बुद्ध को अतिसार (पेचिश) की बिमारी हो गई, बिमारी में ही कुशीनगर की ओर चल दिये। मार्ग में भगवान बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनन्द से कहा— "आनन्द, आज रात के पिछले पहर, कुशीनगर के शालव मे जोडे शालवृक्ष के बीच तथागत की मृत्यु होगी।"

गडक नामक नदी मे भगवान ने अन्तिम स्नान किय फिर पाच सौ शिष्यों व मल्लों के साथ भगवान बुद्ध शाल पहुँचे। वहा जुडवां शालवृक्ष के बीच में बिछौना वि

दिया। बिछौने पर लेट कर तथागत ने उपदेश दिया। आनन्द तथागत की शरीर पूजा से तुम निश्चिन्त रहो, जैसा व्यवहार चक्रवर्ती राजा के शरीर के साथ किया जाता है; वैसा ही मेरे शरीर के साथ-करना।" इसके बाद निम्न बातें कह कर सदा के लिये अपनी आंखों को बन्द कर दिया।

"आनन्द! तुम ऐसा न सोचना कि अब हमारे गुरु इस संसार में नहीं रहे। मैंने जो धर्मोपदेश दिये, वे ही मेरे बाद तुम्हारे गुरु हैं।"

पाटलिपुत्र

प्रश्न—पाटलिपुत्र की प्राचीन परिस्थितयों का ऐतिहासिक विवरण दीजिए।

उत्तर—पाटलिपुत्र आधुनिक पटना का प्राचीन नाम है! वह बिहार प्रांत में गङ्गा और सोन नदियों के संगम पर बसा है। बिम्बिसार को इसके पुत्र अजात शत्रु ने मार डाला और वह स्वयं राजा बन बैठा फिर अजातशत्रु का वंशज राजा उदयी मगध की राजधानी को राजगृह से उठवा कर पाटलिपुत्र ले आया।

मौर्य-काल में पाटलिपुत्र बड़ी उन्नत दशा में था क्योंकि देश में सब प्रकार से समृद्धि थी! यह नगर उस समय संसार का सब से बड़ा नगर था।

मेगस्थनीज पाटलिपुत्र की सुन्दरता देख कर मुग्ध हो गया था। उसका वर्णन करता हुआ वह लिखता है।

यह नगर ८० स्टेड़ियां लम्बा और १५ स्टेड़ियां (लगभग १॥मील) चौड़ा था। इसके इर्द गिर्द लकड़ी की बड़ी शहर पनाह थी। इसमें तीर चलाने के लिये छेद बने हुए थे! यह शहर पनाह ६४ फाटकों और ५७० बुर्जों से सुशोभित थी! शहर

में एक तरफ गंगा और दूसरी ओर सोन की धारा बहती थी। शहर पनाह के चारों तरफ ६०० फुट चौड़ी और लगभग ३० हाथ गहरी खाई थी इसमें सोन का जल भरा रहता था।

मेगस्थनीज के कथनानुसार यह समृद्धि में बढ़ा चढ़ा था।

२ प्रियदर्शी अशोक के समय में पाटलिपुत्र में बौद्धों का अच्छा जमघट रहता था। दूर-दूर के वैज्ञानिक और भिक्षुक यहां इकट्ठे होते थे। मौर्य साम्राज्य के नष्ट होने पर शुङ्ग वंश के हाथ मे इसका अधिकार आया। इस वंश की राजधानी भी पाटलिपुत्र ही रही। चन्द्रगुप्त और समुद्रगुप्त के समय तक पाटलिपुत्र गुप्त साम्राज्य की राजधानी रहा परन्तु चन्द्रगुप्त द्वितीय अपनी राजधानी को उज्जयिनी उठा कर ले गये। राजधानी हट जाने पर भी पाटलिपुत्र की दशा बिगड़ी नहीं। इसके बाद लगभग २०० वर्षों के अन्दर पाटलिपुत्र नष्ट हो गया। हूणों के अत्याचार से त्रस्त हो नगर निवासी शहर छोड़ कर चले गये। सन ५३० ई० के लगभग एक भारी भूकम्प ने शहर को क्षतिग्रस्त कर दिया।

३. पाटलिपुत्र या पटना सदा से ही शिक्षा का केन्द्र रहा है। मौर्यो के पहले से ही विद्या के लिये इसका बड़ा नाम रहा। बड़े-बड़े विद्वान् भी यहाँ की परीक्षा में उत्तीर्ण होना बड़े गौरव की बात समझते थे। सूर्य सिद्धांत के रचयिता आर्यभट्ट का जन्म यहीं हुआ था। प्रसिद्ध जैन विद्वान् स्थूलभट्ट भी पाटलि-पुत्र ही के रहने वाले थे। मुगलों के शासन-काल में पटना अरबी और फारसी का विद्यापीठ था। सिक्खों के दसवें गुरु गोविंदसिंह का भी जन्म इसी पटना मे हुआ था। आज भी पटना इस क्षेत्र में पीछे नहीं है। यहाँ एक बड़ा विश्वविद्यालय है। और इस कारण यहाँ अनेक प्रसिद्ध विद्वान रहते हैं।

प्रश्न—पाटलिपुत्र की खुदवाई से जो अवशेष चिन्ह मिले हैं, उनका उल्लेख करो।

उत्तर—प्राचीन पटना की खुदाई से कुछ अवशेष चिन्ह मिले हैं। उनका विवरण नीचे दिया जाता है :—

१. कुम्भगढ़—मौर्यों के महलों के अवशेष पटना में गुल्ज़ारबाग के नज़दीक कुंभगढ़ गॉव और उसके खेतों तथा पड़ोस की रेल पटड़ी के नीचे पाये गये हैं। बहुत सम्भव है कि इसी स्थान पर सम्राट् चन्द्रगुप्त का राज महल रहा हो। १८९५-९६ ई० में पहले पहल इस स्थान को खुदवाया गया। जिससे अनेक मूर्तियॉ, खुदे हुए पत्थर, शाल की लकड़ी की कण्ही अथवा खम्भे, सचित्र ईंटें और मकानों की ईंटों वाली दीवारें निकली थीं। जान पड़ता है कि यहां एक बड़ा विशाल भवन था। उसमें खम्भों की १५ कतारें थी और प्रत्येक कतार में १५ खम्भे थे। अर्थात् कुल मिलाकर २२५ खम्भों का यह विशाल भवन था।

अगम कुआं—यह कुम्भगढ़ से पूर्व की ओर है। कहा जाता है कि अशोक ने अपने कैदियों को कष्ट देने के लिये बनवाया था। कुॅए की गोलाई (परिधि) भीतर की २० फुट २ इंच है। इसके पानी से ऑख और चमड़े की बीमारियॉ दूर हो जाती हैं। यह भी अनुमान है कि अशोक के महलों में जिन पशुओं का मांस पकाने के लिये जाता था यहॉ उन पशुओं का वध होता था।

पंच पहाड़ी—प्राचीन पाटलिपुत्र के दक्षिण किनारे पर पंच पहाड़ी या बड़ी पहाड़ी है। ऐसा जान पड़ता है कि यहॉ अशोक के बनवाये पाँच स्तूप हैं। यह स्थान ३००० फुट लम्बा और ६०० फुट चौड़ा है। इस खुदाई से मौर्य काल के चुनार

से सारनाथ भी एक प्रसिद्ध स्थान है। बौधगया में ज्ञान होने के पश्चात्, सब से पहिले भगवान बुद्ध ने यहाँ निवास किया था और यहीं सर्व प्रथम अपने पाँच शिष्यों को आपने बौद्ध-धर्म का ज्ञान दिया था।

बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् शीघ्र ही सारनाथ तीर्थस्थान वन गया। अशोक के समय में सारनाथ विद्या का केन्द्र था। जब भारत में बौद्ध धर्म की अवनति हुई, तो सारनाथ का भी महत्व घट गया। परन्तु आज कल सारनाथ बौद्धों का सब से बड़ा तीर्थ है।

प्रश्नः-- सारनाथ की खुदाई से जो प्राचीन स्मारक वस्तुयें मिली हैं, उनका उल्लेख कीजिये।

उत्तरः— सन् १७६३-६४ में काशी के राजा के मंत्री जगतसिंह ने जगतगंज वस्ती बनाने के लिये सारनाथ के एक स्तूप का सारा मसाला खोद लिया था। इसलिये वह बहुमूल्य स्तूप जड़ से खोद लिया गया। यहां एक विशाल भगवान बुद्ध की मूर्ति भी मिली। तभी से सारनाथ की फिर से प्रसिद्धि होने लगी। १८३४ में कनिंगहम साहब— जो पुरातत्व विभाग के डाइरेक्टर थे — ने खुदवाई आरम्भ की, वहाँ बुद्ध की साठ मूर्तियां उनको इकट्ठी मिलीं। साथ ही वहाँ और भी वस्तुयें मिलीं; जिन पर गुप्त लिपि में खुदे दान—लेख हैं, ये मूर्तियाँ बंगाल की ऐशियाटिक सोसायटी कलकत्ते में सुरक्षित हैं।

इसके बाद कई इंजिनियरों ने वहाँ खोज की। जब सारनाथ जाने के लिने एक पक्की सड़क बनवाई गई तो वहाँ खुदाई में एक सुन्दर पूर्ण बुद्ध की मूर्ति मिली। खुदाई से मालूम हुआ कि वहाँ सारनाथ का पुराना मन्दिर था। इसके पास ही अशोक-स्तम्भ और उसका सिंह शिखर पाया गया। इसके अतिरिक्त

कई मूर्तियाँ व वस्तुयें मिली हैं। जिनमें मुख्य निम्नलिखित हैं—

१ धर्मराज स्तूप—जिसको दीवान जगतसिंह ने नष्ट किया था वही धर्मराज स्तूप है। इस स्तूप को ६गज खोदने पर दो पात्र, एक पत्थर और दूसरा सगमरमर के मिले। इस स्तूप के पास ही एक विशाल मदिर के शेष चिन्ह मिले हैं। इसकी दीवारें और छत्त अब भी सुरक्षित हैं। सम्भव है इन सबको मुसलमान बादशाहों की आज्ञा से नष्ट किया गया हो। बौद्ध पुस्तकों से पता चलता है कि यहां हज़ारों भिक्षुक रहा करते थे। इस मदिर को "मूलगधकुटी" कहते थे।

२ धमेख स्तूप—यह स्तम्भ उस स्थान पर बनाया गया है, जहाँ पर भगवान बुद्ध ने सर्व प्रथम अपने पाँच शिष्यों को उपदेश दिया था। इसके पत्थरों पर अच्छी खुदाई है। यहाँ के लोग इसे "लौरी का कुदान" कहते हैं। इसके पास ही कुछ मठ पृथ्वी को खोद कर निकाले गये हैं। यहाँ एक सुरग भी मिली है, जिस मार्ग से काशी की महारानी भगवान बुद्ध की पूजा करने जाती थी।

३ चौखंडा स्तूप—जिस स्थान में भगवान बुद्ध ने पूर्वजन्म मे छ: दाँत वाले हाथी का शरीर धारण किया था, और जहाँ वे अपने पाँच शिष्यों को मिले थे, उस स्थान के स्तूप को चौखडा स्तूप कहते है। जिस समय हुमायूँ, शेरशाह से हार कर भागा था तो यहीं छिप कर रहा था। उसी की यादगार में अकबर ने यहाँ एक मीनार बनवा दी थी।

४. अशोक स्तम्भ का सिंह-शिखर:—यह स्तम्भ तो नष्ट हो चुका है परन्तु स्तम्भ का शिखर खंड मिला है, जिसमें सिंह की त्रिमुखी (तीन मुंह वाली) मूर्ति मिली है।

अब सारनाथ की बड़ी प्रसिद्धि हैं। वहां से प्राप्त मूर्तियों तथा वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिये भारत सरकार ने एक अजायब घर बना दिया है। उनको देखने से प्रतीत होता है, कि भारत का प्राचीन काल कितना कलाप्रिय तथा वैज्ञानिक था? यहां मौर्यकाल, गुप्तकाल, कुशान वंश व हर्षकाल की मूर्तियां तथा खंडहर देखने के योग्य हैं, अब प्रतिवर्ष सारनाथ में बौद्ध-धर्म सम्मेलन होता है।

(९)

सांची

प्रश्नः—सांची का निर्माण कब और किन परिस्थितियो में हुआ? उसका ऐतिहासिक विवरण लिखिये। तथा खुदाई से प्राप्त वस्तुओं का भी उल्लेख करो।

उत्तरः—सांची रियासत भूपाल में एक छोटा सा ग्राम है। सांची के इतिहास का आरम्भ महाराजा अशोक से होता है। सांची का निर्माण इन्होंने ही किया था। जब अशोक का विचार बौद्ध धर्म प्रचार का हुआ, तो उन्होंने बहुत से स्तूप तथा स्तम्भों का निर्माण किया। उन्हीं में से सांची भी है। जब अशोक उज्जैन राज्य के प्रतिनिधि (वायसराय) बन कर जा रहे थे, तो मार्ग में उन्होंने एक ब्राह्मण कन्या से विवाह किया। उसी कन्या के कहने से वहां चैत्य का निर्माण हुआ था। पीछे शुंग वंश के शासकों के काल में भी वहाँ बहुत से मठ बनाये गये।

खुदाई से प्राप्तः—सांची के स्तूप एक पहाड़ी पर हैं। पहाड़ी का शिखर चौरस और सुन्दर झाड़ियों से सुसज्जित है। सांची के स्तूपों की ओर उन्नीसवीं शताब्दि के आरम्भ तक किसी का ध्यान नहीं गया। १८२२ में भोपाल रियासत के पोलिटिकल ऐजेंट जानसन ने इस को खुदवाया, परन्तु कुछ न मिला। फिर १८५१ में खोदा गया। भाग्यवश बहुत सी वस्तुएं प्राप्त हुईं

कुछ छोटे छोटे बक्स मिले। जिनमें बौद्ध भिक्षुओं की हड्डियां मिलीं कुछ स्तूपों के पत्थर, मूर्तियां, तथा स्मारक चिह्न मिले हैं; जो वहीं के अजायब घर में रखीं हैं।

प्रश्नः—साची के स्तूपों, स्तम्भों व मठों का विवरण दीजिये।

उत्तरः—१. मुख्य स्तूपः—यह अन्य स्तूपों में सबसे ऊचा है। इसीलिये इसको मुख्य स्तूप कहते हैं। इस स्तूप की बनावट अर्द्ध अडे के आकार की है। ऊपर का शिखर इसका चपटा और नीचे एक थड़ा (चबूतरा) सा बना है। ऊपर चढ़ने को सीढियां बनी हैं। नीचे पत्थर की एक वेदी है, जिसके चारों ओर द्वार बने हैं। द्वारों पर चार सुन्दर तोरण हैं। जिनमें बुद्ध की भिन्न भिन्न अवस्थाओं के चित्र बने हैं।

२. दूसरा स्तूपः—मुख्य स्तूप के दक्षिण की ओर ४०० गज की दूरी पर बना है। इसके बनाने के उद्देश्य के विषय में कुछ नहीं कहा जाता। अनुमान है कि या तो यह भिक्षुओं की भिक्षा एकत्रित करने या दूध जमा करने को बना होगा।

३. तीसरा स्तूपः—मुख्य स्तूप से उत्तर पूर्व की ओर ५० गज की दूरी पर बना है। इसका केवल एक ही तोरण है। यहां दो डिब्बे मिले हैं, जो बुद्ध के दो शिष्यों के स्मारक थे।

स्तम्भ—यहाँ राजा अशोक तथा उनके पूर्व के कई स्तम्भ हैं, जो प्राय' सब के सब नष्ट-भ्रष्ट हो चुके हैं। इनकी शिल्प कला अद्वितीय थी। इनमें एक मुख्य स्तम्भ है। जिसपर अशोक के शिला लेख खुदे हैं। कहते हैं कि यह ४२ फुट ऊचा था।

मठः—यहा केवल पाच मठों का पता लगा है। सभी मठों की बनावट एक सी है। इससे पूर्व की ओर एक मन्दिर में बुद्ध की मूर्ति मिली है। कुछ चैत्य (चिता मदिर) भी थे, जिन में

बुद्ध की मूर्तियाँ रखी जाती थीं।(१०)

नालन्दा

प्रश्नः—नालन्दा का ऐतिहासिक विवरण देते हुए, उसकी खुदाई से जो शेष चिह्न प्राप्त हुए हैं उनका उल्लेख कीजिये।

उत्तर—**इतिहासः**—ऐतिहासिक दृष्टि से नालन्दा भारत का बहुत प्राचीन तथा सांस्कृतिक स्थान है। यह स्थान मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह से ५-६ मील उत्तर की ओर है। आज-कल यह स्थान पटना जिले के बिहार नगर के पास स्थित है। नालन्दा स्टेशन से एक मील दूरी पर बड़गाँव नाम की एक छोटी सी बस्ती है। इसी स्थान पर नालन्दा विश्वविद्यालय था।

भग्न अवशेष— आज कल जो बड़गाँव नामक स्थान की खुदाई हुई उससे पता चलता है कि नालन्दा के खडहर केवल बिहार प्रान्त के ही वैभव नहीं, अपितु समस्त भारत की प्राचीन सभ्यता के साक्षी हैं। विद्यादान की दृष्टि से तो इसका स्थान विश्व में सम्मानित था। जहाँ विश्वविद्यालय था आज वहाँ केवल मात्र खंडहर हैं।

यहाँ जो टूटी फूटी दीवारें खड़ी हैं, वे काफी चौड़ी हैं। तीन आदमी एक साथ इन दीवारों पर चल सकते हैं। आँगन के साथ दूसरा आंगन हैं। यहीं हजारों विद्यार्थी बैठ कर विद्याध्ययन करते थे। दूसरे आंगन में एक बड़ा स्तूप मिला है, जो पहाड़ी सा मालूम होता है। बड़ा विशाल वर्गाकार है। बड़े स्तूप के शिखर पर मंदिर तथा एक मूर्ति पाई गई है। इसके एक कोने पर एक मन्दिर है; जिसमें बुद्ध की एक बड़ी मूर्त्ति पाई गई हैं।

बड़े स्तूप के उत्तर में तीन ऊचे टीले और हैं, नालन्दा में जो कुँए पाये गये हैं वे विचित्र हैं। नालन्दा के भण्डार घर में पुराने अनाज और बर्तन देखने योग्य हैं। बर्तनों की बनावट

चित्रकलापूर्ण है। यहाँ भी अजायब घर बना है, जिसमें यहाँ से प्राप्त वस्तुएँ रखी हैं। जैसे—पुराने हथियार, वर्तन, बुद्ध प्रतिमाएँ, शिलालेख, मोहरें आदि। शिल्प-विद्या के बहुत उत्कृष्ट उदाहरण यहाँ की वस्तुएँ हैं।

नालन्दा विश्वविद्यालय

प्रश्न—नालन्दा विश्वविद्यालय का सम्पूर्ण वर्णन कीजिये ?

उत्तर—नालन्दा विश्वविद्यालय की नींव कब पड़ी, इस विषय में अभी कोई भी प्रमाणिक सामग्री नहीं मिली। परन्तु इतना निश्चित हो जाता है कि ईसा की पाँचवीं शताब्दि के किसी समय इसका निर्माण किया होगा। सम्भवत' तक्षशिला के नष्ट होने के बाद वहाँ के आचार्य हूणों के अत्याचारों से पीड़ित होकर पूर्व की ओर बढ़े होंगे, और उन्होंने फिर से इस विद्या के केन्द्र की स्थापना की होगी। फाहियान के चले जाने के बाद तो इस विश्वविद्यालय की कीर्ति देश-विदेशों मे फैल चुकी थी।

ह्यूएनसांग ने नालन्दा विश्वविद्यालय का बहुत विस्तृत वर्णन किया है। ह्यूएनसॉग लिखता है कि इस विद्यालय में प्रविष्ट होने के नियम बडे कड़े थे। शीलभद्र उस समय यहाँ के प्रधानाचार्य थे। साग को योग्य विद्यार्थी समझ कर प्रविष्ट किया गया था। यहाँ सॉग ने कई वर्षों तक विद्या प्राप्त की थी। ह्यूएनसाँग का आँखों देखा वर्णन विश्वसनीय है।

उस समय विश्वविद्यालय में १०००० विद्यार्थी विद्याध्ययन करते थे। भवन की आठ बड़ी बड़ी दीवारें चार कोनों वाली पर्वत शिखर के समान थीं। चार मंजिल के भवन थे। उसके अन्दर भिन्न भिन्न प्रकार की चित्रकारी से युक्त बड़ी बड़ी कोठड़िया थीं। भवन के आगे फूलों से युक्त उद्यान, उनके बीच

बीच में विशाल सरोवर थे । कोठरियां भिन्न भिन्न आकार की छोटी बड़ी थीं। बड़ी श्रेणी के स्नातक को बड़ी और छोटी श्रेणी के विद्यार्थी को छोटी कोठरी रहने को मिलती थी।

चीनी यात्री इत्सिंग जो ७वीं शताब्दि में भारत आया था; वह लिखता है—यहां के विद्यार्थियों से कुछ शुल्क (फीस) नहीं लिया जाता था। विद्यार्थियों को भोजन, वस्त्र, पुस्तकें व अन्य सामग्री मुफ्त मिलती थीं। एक कोठरी में एक ही विद्यार्थी रहता था। ह्यूनसांग ने लिखा है—मुझे प्रतिदिन १२० जम्बीर, २० जायफल, २० खजूर, पाव भर चावल, मक्खन और प्रत्येक मास में १॥ सेर तेल मिलता था । पाल वंश के राजा देवपाल का एक ताम्रपत्र मिला है, उससे विदित होता है कि सुमात्रा के राजा बालपुत्र देव ने नालन्दा में एक मठ बनवाया था। इसी के बदले देवपाल ने पाँच गाँव और बालपुत्रदेव ने पाँच गाँव सुमात्रा में मठ को दिये थे। उन गाँवों की आय से मठ का व्यय चलता था।

इस विश्वविद्यालय में वेद, शास्त्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, शिल्प तथा संगीत सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। अध्यापकों की संख्या १००० के लगभग थी, जो भिन्न भिन्न विषयों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। आचार्य शीलभद्र का शासन सन्तोषजनक था। प्रातःकाल एक बड़े घंटे के शब्द से स्नान की सूचना दी जाती थी। स्नान के बाद प्रार्थना होती थी, विद्यालय में एक बहुत बड़ी जल-घड़ी थी।

शीलभद्र के अतिरिक्त धर्मपाल, चन्द्रपाल, प्रभामित्र, ज्ञानचंद्र, शीघ्रबुद्ध आदि आचार्य थे, लामा सम्प्रदाय के प्रवर्तक पद्मसम्भव भी यहीं के स्नातक थे। यहाँ एक नौ मंजिला पुस्तकालय था। इसकी ऊंचाई ३०० फुट के लगभग थी । चीन, जापान,

तिब्बत. जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, यूनान,तुर्किस्तान आदि के छात्र यहाँ विद्याध्ययन करते थे।

इतने दिनों की अपूर्व प्रसिद्धि के बाद, कालचक्र के कारण आज नालन्दा खण्डहर रूप में दिखाई देता है, निर्दय काल के परिवर्तन चक्र की गति से प्राचीन भारत के गौरव, सस्कृति व सभ्यता के प्रमाण केवल पत्थर मिट्टी के टूटे-फूटे टीले ही दे रहे हैं।

प्रश्न—पुरातत्व (प्राचीन वस्तुओं की खोज) विभाग के द्वारा खोज की गई सामग्री से हमारी प्राचीन सभ्यता व इतिहास पर जो प्रभाव पड़ा, उसका उल्लेख कीजिए।

उत्तर—भारत के प्राचीन इतिहास का गौरव पूर्ण अंश अब भी हमारी दृष्टि से छिपा हुआ है। यह अंश जो भूत के अन्धकार में छिपा हुआ है, उसकी खोज के लिये हमे पुरातन स्मारक चिह्न की ही शरण लेनी होगी। यदि हम अपने पूर्वजों की अमूल्य रक्षा कर पाते तो आज भारत का इतिहास विश्व के सन्मुख उज्ज्वल प्रमाण में, गौरव के साथ स्वर्णाक्षरों में चमकता, परन्तु द्वेष व ईर्षामयी प्रवृत्ति ने हमारे ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी। फिर भी जो प्राचीन सभ्यता व कला-कौशल का वर्णन पुस्तकों मे ही होता तो उसका परिचय कुछ इने गिने उच्च कोटि के ही विद्वानों को मिलता, परन्तु इन प्राचीन स्मारकों को पढ़े लिखे, अनपढ, देशी-विदेशी सभी देख सकते हैं, तथा हमारे प्राचीन कला व विज्ञान के वैभव का सभी अनुमानलगा सकते हैं।

सरकार की ओर से एक विभाग का निर्माण हुआ, जिस का कार्य प्राचीन स्मारकों व सामग्रियों की खोज करना है। उसी का नाम पुरातत्व विभाग है। आरम्भ में तो इस विभाग का कार्य विस्तृत नहीं था परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् इस विभाग के

कितनी विकसित थी।

पुरातत्व विभाग ने जो खोज की है, वह यद्यपि सराहनीय है तथापि अभी परिपूर्ण नहीं कही जा सकती। अभी भी हमें प्राग् बौद्धकालीन इतिहास के स्मारकों का ठीक ठीक पता नहीं लग पाया है। अभी कई स्थान शेष हैं जहां की खुदाई करनी अनिवार्य है। अभी भी कई पहाड़ों (जैसे गढ़वाल व कमायूं के जिलों में) तथा जगलों मे कई ऐसे स्थान हैं, जहा हमारा प्राचीन इतिहास खंडहरों के नीचे अन्धकार में सोया हुआ है। हमें आशा है कि अब हमारी राष्ट्रीय सरकार इस ओर ध्यान देगी।

पुस्तकान्तर्गत कुछ ऐतिहासिक व्यक्तियों का परिचय

चाणक्य—इनका वास्तविक नाम विष्णुशर्मा था। चणक के पुत्र होने के कारण इनको चाणक्य तथा कूटनीति के पंडित होने के कारण इनको कौटिल्य भी कहा जाता है। आप तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य तथा चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु थे। इन्होंने ही चन्द्रगुप्त की सहायता से नन्द वश का नाश कर, चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध की गद्दी पर बिठाया था।

चन्द्रगुप्त मौर्य—यह तक्षशिला का स्नातक था। कुछ विद्वानों की सम्मति है कि महा पद्म नन्द की मुरा नामक एक दासी थी, उसी का पुत्र चन्द्रगुप्त था। परन्तु श्री जयशंकर प्रसाद जी ने सिद्ध किया है कि मौर्य एक जाति थी, जो नैपाल की तराई में निवास करती थी, चन्द्रगुप्त चाणक्य का शिष्य था। इसी ने मौर्य वश की नींव डाली थी और नन्द वंश की समाप्ति की थी।

कठिन शब्दों के अर्थ

उपलब्ध=प्राप्त ।
निष्कर्ष=निचोड, परिणाम ।
भग्नावशेष=टूटे फूटे रूप मे प्राप्त वस्तुएं ।
निर्विवाद=बिना वाद-विवाद के (सत्य) ।
आगमन=आना, आये ।
पुरातत्ववेत्ता=पुरानी वस्तुओं की खोज करने वाले ।
अतीत=भूतकाल, प्राचीन समय
निर्माण=बनाना ।
पतन=गिरावट, नाश ।
निर्वाण=मोक्ष ।
अमात्य=मत्री ।
पुष्पवृष्टि=फूलों की वर्षा ।
स्तूप=खम्बा, मीनार ।
अनिवार्य=आवश्यक ।
मुद्रा=सिक्के, रुपये, मोहर ।
वाराणसी=बनारस ।
कार्षापण=प्राचीन मुद्रा का नाम ।
आख्यायिका=कहानी ।
हस्तगत=प्राप्त ।
भ्रमण=घूमना ।
अभिषेक=राजतिलक ।
पोखर=तालाब ।
गणराष्ट्र=छोटे २ राज्य ।
शेषांश=हड्डी (फूल) ।
विद्योपार्जन=विद्या पढ़ना या प्राप्त करना ।
विश्व व्यापी=ससार में फैला हुआ ।
पाश्चात्य=पश्चिमी, यूरोप की ।
विश्रामगृह=आराम करने के घर धर्मशालायें ।
अध्यक्ष=सभापति ।
निर्मित=बनाई हुई ।
दिग्विजय=ससार को जीतना ।
विध्वस्त=नाश, मिट जाना ।
जिज्ञासू=शिष्य, खोजी ।
उपवन=बाग, झाड़ी ।
श्रवण=सुनना ।
यथेष्ट=मनचाही ।
अनुसधान=खोज, ढूढ ।

मुद्रक—विजय प्रेस दिल्ली । प्रकाशक—भारत बुक डिपो दिल्ली ।